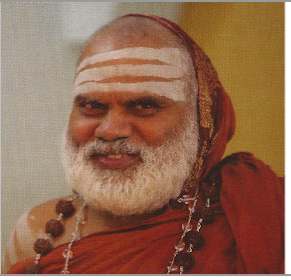

Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam

an e-magazine on advaita

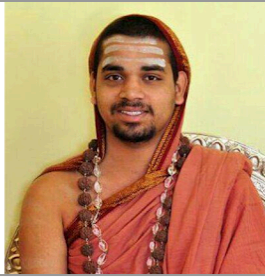

अनुग्रह भाषण

सिर्फ़ उन लोगों को सलाह दें जो मानने को तैयार हों

इस दुनिया में सभी लोग सब कुछ नहीं जानते। हमारे पूर्वजों ने यह बात इस तरह कही है: **न हि सर्वः सर्वं जानाति।**

कोई कुछ जान सकता है, और कुछ नहीं भी। जो हम नहीं जानते, वह हमें दूसरों से सीखना चाहिए, और जो हम जानते हैं, वह दूसरों को बताना चाहिए।

लेकिन कुछ लोग दूसरों से सीखने के लिए तैयार नहीं होते। हमें ऐसे लोगों को सलाह देने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। वे न सिर्फ़ हमारी अच्छी बातों को नज़रअंदाज़ करेंगे, बल्कि हमारी बेइज्ज़ती भी करेंगे।

श्रीमद् रामायण का उदाहरण लें। विभीषण ने रावण को सही रास्ते पर चलने के लिए मनाने की कोशिश की। लेकिन रावण ने सलाह अनसुनी कर दी और विभीषण को बेइज्ज़त किया।

इसी तरह, महाभारत में, कई लोगों ने दुर्योधन को सही रास्ता सिखाने की कोशिश की; लेकिन उसने सारी सलाह अनसुनी कर दी। हमें ऐसे लोगों को सिखाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

अगर आप सफ़ेद कपड़े को रंग से रंगते हैं, तो वह रंग सोख लेगा। लेकिन रंगीन कपड़ा आसानी से कोई दूसरा रंग नहीं सोखेगा। इसलिए, हमें सिर्फ़ उन्हीं को सलाह देनी चाहिए जो हमारी बातों पर ध्यान देने के लिए तैयार हों। बाकियों को सलाह देने से बचना ही बेहतर है।

वचस्तत्र प्रयोक्तव्यं यत्रोक्तं लभते फलम् ।
स्थायी भवति चात्यन्तं रागः शुक्लपटे यथा ॥

--जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी

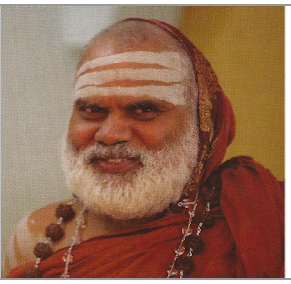

Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam

an e-magazine on advaita

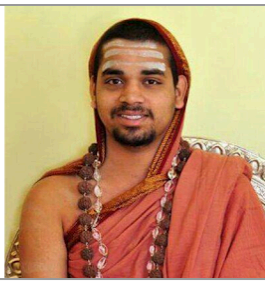

||आत्मबोध:||

||ātmabodha:||

आत्मावभासयत्येको बुद्ध यादीनीन्द्रियाण्यपि ।

दीपो घटादिवत्स्वात्मा जडैस्तैर्नावभास्यते ॥ २८ ॥

ātmāvabhāsayatyeko buddha yādīnīndriyāṇyapi |

dīpo ghaṭādivatsvātmā jaḍaistairnāvabhāsyate || 28 ||

जैसे दीपक घड़े या घड़े को प्रकाशित करता है, वैसे ही आत्मा मन और इंद्रियों आदि को प्रकाशित करती है। ये भौतिक वस्तुएं स्वयं को प्रकाशित नहीं कर सकतीं, क्योंकि वे जड़ हैं।

स्वबोधे नान्यबोधेच्छा बोधरूपतयात्मन: ।

न दीपस्यान्यदीपेच्छा यथा स्वात्मप्रकाशने ॥29॥

svabodhe nānyabodhecchā bodharūpatayātmana: |

na dīpasyānyadīpecchā yathā svātmaprakāśane ||29||

His Holiness 35th Jagadguru Shankaracharya Sri Abhinavavidya Tirtha Mahaswamiji,

परम पूज्य ३५वें जगद्गुरु शंकराचार्य श्री अभिनवविद्या तीर्थ महास्वामीजी

एक जलते हुए दीये को अपनी रोशनी के लिए दूसरे दीये की ज़रूरत नहीं होती। वैसे ही, आत्मा जो खुद ज्ञान है, उसे जानने के लिए किसी दूसरे ज्ञान की ज़रूरत नहीं होती।

निषिध्य निखिलोपाधी न्नति नेतीति वाक्यतः ।

विद्यादैक्यं महावाक्यै-जीवात्मपरमात्मनोः ॥ ३० ॥

niṣidhya nikhilopādhī nnati netīti vākyataḥ |

vidyādaikyaṃ mahāvākyai-jīvātmaparamātmanoḥ || 30 ||

शास्त्रों के कथन 'यह यह नहीं है, यह यह नहीं है' की मदद से शर्तों (उपाधियों) को नकारने की प्रक्रिया से, महान महावाक्यों द्वारा बताए गए व्यक्तिगत आत्मा और परमात्मा की एकता को महसूस करना होगा।

(जारी रहेगा...)

धर्मशास्त्र का मार्ग

इस भाग में हम प्रश्नोत्तर रूप में "धर्मशास्त्र का मार्ग" देखेंगे। "धर्मशास्त्र" से संबंधित हमारी शंकाओं के समाधान के लिए, पूज्यश्री स्वामी ओंकारानंद सरस्वती, संस्थापक आचार्य, श्री स्वामी चिद्भवानंद आश्रम, वेदपुरी, थेनी, वैदिक शास्त्रों के अनुसार हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

नमस्कारम स्वामीजी, कुछ लोग मंदिर नहीं जाते। जब उनसे वजह पूछी जाती है, तो वे जवाब देते हैं कि वे पूसलार नयनार की तरह हैं, और वे अपने दिल में भगवान की पूजा करते हैं। सवाल यह है: मंदिर क्यों जाना चाहिए?

जवाब: सिर्फ़ मंदिरों में ही भगवान के बारे में अच्छी तरह सोचा जा सकता है। जब लोग कहते हैं कि वे अपने दिल में भगवान की पूजा करते हैं, तो यह पूरी तरह से बचने की कोशिश है। हमें इलाज के लिए हॉस्पिटल क्यों जाना चाहिए? अपने घरों में रहकर, क्या हम बस अपने अंदर के भगवान से प्रार्थना नहीं कर सकते, और खुद से नहीं कह सकते कि हम बीमारी से ठीक हो गए हैं? नहीं, हम ऐसा कुछ नहीं करते।

मंदिर जाकर पूजा करने में बहुत सी अच्छी बातें हैं। ज़रा सोचिए कि हमें मंदिर जाकर पूजा करने और घर लौटने में कितना समय लगता है। क्या हम इतने लंबे समय तक अपने दिल में भगवान की गहरी पूजा कर पाएंगे?

मंदिर जाने से पहले भी, अपने घरों में रहकर, हमें मन में मंदिर जाने की कल्पना करनी चाहिए। हमें मन में शांत रहने और किसी से कुछ और बात न करने का संकल्प लेना चाहिए। हमें मन में शांत रहने और किसी से कुछ और बात न करने का संकल्प लेना चाहिए।

(जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी और पूज्यश्री ओंकारानंद सरस्वती, संस्थापक आचार्य, श्री स्वामी चिद्भवानंद आश्रम @ वेदपुरी, तेनी 15 अप्रैल - 17,2017 (विजय यात्रा))

मंदिर पहुंचने के बाद, अगर हम वहां अपने दोस्तों से मिलते हैं, तो हमें उनके साथ दुनियावी बातें नहीं करनी चाहिए। मंदिर पवित्र और पवित्र होते हैं। वे जनरेटर की तरह काम करते हैं। मंदिर जाने से हमें बहुत सी खास एनर्जी मिलती है, जो हमें सिर्फ घर पर रहकर नहीं मिल सकती।
मंदिर में सभी तरह की पूजा और रीति-रिवाज सिर्फ हमारे लिए किए जाते हैं। वे सिर्फ देश के सभी नागरिकों की भलाई के मकसद से किए जाते हैं। वहां पूजा के सभी अलग-अलग तरीके सिर्फ इसी मकसद के लिए बनाए गए हैं। उन्हें "परार्थ पूजा" कहा जाता है।

किसी व्यक्ति की - अपनी भलाई के लिए - प्रार्थना को "आत्मार्थ पूजा" कहा जाता है। मंदिर में रोज़ाना पांच कला पूजा की जाती है। गांव के लोगों को रोज़ाना कम से कम एक कला पूजा में शामिल होना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए। तभी मंदिर में रौनक बनी रहेगी।

हमें पूरा विश्वास है कि मंदिरों में उन लोगों की दिव्य शक्तियाँ हैं जिन्होंने इसे पवित्र किया है। ऐसी मान्यताएँ तर्कसंगत होती हैं, जो ज्ञान पर आधारित होती हैं।

मंदिर जाने से पहले, हमें सबसे पहले मन ही मन उस यात्रा के बारे में सोचना चाहिए। हमें अपने मन में उन अलग-अलग सन्निधियों की कल्पना करनी चाहिए जिन्हें हम देखने की योजना बना रहे हैं, और उन अलग-अलग श्लोकों और तमिल गीतों की, जिन्हें हम वहाँ गाएँगे। हमारी सच्ची प्रार्थना होनी चाहिए - हे प्रभु! कृपया मेरे मन को सभी बुरी चीज़ों से साफ़ कर दें। इसे हमेशा सिर्फ़ अच्छे विचारों से भरा रहने दें!

मंदिर में, हमारी पूजा का तरीका शास्त्रों में बताए गए तरीके के अनुसार होना चाहिए। हमें कोडी मरम में माथा टेकना चाहिए। सभी परिवार देवताओं की पूजा करने के बाद, हमें मूलवर सन्निधि में पूजा करनी चाहिए। शिव मंदिर और विष्णु मंदिर में पूजा के तरीके, सभी को व्यवस्थित रूप से कोडित और निर्धारित किया गया है। हमें न केवल मंदिर में पूजा करने के तरीकों का पालन करना चाहिए, बल्कि उन्हें दूसरों को भी सिखाना चाहिए। नामावली पढ़ते हुए, हमें एक लाइन में लगना चाहिए। हमें उन्हें अलग-अलग सन्निधियों पर की जाने वाली पूजा के अलग-अलग तरीके बताने चाहिए। मंदिर की पूजा पूरी करने के बाद, हमें बिना सेल फ़ोन देखे, एक जगह चुपचाप और शांति से बैठना चाहिए, अपनी आँखें बंद करनी चाहिए, और मन ही मन उन अलग-अलग देवताओं के रूपों के बारे में सोचना चाहिए, जिनकी सन्निधियों में हम अभी गए थे। हमें भगवान के अलग-अलग नामों का जाप करना चाहिए। पूरी इंसानियत की भलाई के लिए प्रार्थना करने के बाद हम मंदिर से निकल सकते हैं। अपने घर पहुँचकर, बैठकर, हमें एक बार फिर मंदिर जाने के अपने अनुभव याद करने चाहिए। सिर्फ़ इन सब बातों को मानने से ही हमें मंदिर जाने का असली फ़ायदा मिलेगा। सिर्फ़ इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर, हमारे पुरखों ने पूजा के ऊपर बताए गए तरीके बताए हैं। एक पुरानी कहावत भी है - ऐसे गाँव में नहीं रहना चाहिए, जहाँ मंदिर न हो।

सिर्फ इतना ही नहीं। हर कोई अपने घर में अलग पूजा का कमरा नहीं बनवा सकता। लेकिन सभी, मंदिर ज़रूर जा सकते हैं। पुराने ज़माने में, बुज़ुर्ग लोग अपना ज़्यादातर समय मंदिरों में जप और ध्यान में बिताते थे। इसका मतलब

यह भी था कि उनके घरों में परेशानियाँ कम होती थीं।

जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य सन्निधानं श्री श्री श्री विद्युशेखर भारती महास्वामीजी और पूज्यश्री ओंकारानंद सरस्वती, संस्थापक आचार्य, श्री स्वामी चिद्भवानंद आश्रम @ वेदपुरी, तेनी 15 अप्रैल - 17,2017 (विजय यात्रा))

बहुत ज़्यादा उम्र में, किसी को चलने में भी मुश्किल हो सकती है, और ऐसी हालत में, मंदिर जाना मुमकिन नहीं होगा। सिर्फ़ इसी वजह से - (कि बुज़ुर्ग मंदिर नहीं जा सकते) - क्या भगवान खुद रथों में शहर में घूमते हैं, उनके दरवाज़े तक। मंदिर, जिसका प्रतीक रथ है, उनके घरों तक आता है, जहाँ वे नमस्कार कर सकते हैं। अगर कोई बिस्तर पर है, और दरवाज़े तक भी नहीं आ सकता, तो वह पहले किए गए सभी मंदिर के दौरों को याद करके मन ही मन खुश हो सकता है। किसी भी मंदिर में न जाकर, कोई सिर्फ़ खुद को धोखा दे रहा है। यह दावा करने के बजाय कि वे मन ही मन पूजा करते हैं, वे साफ़-साफ़ कह सकते हैं, और मान सकते हैं कि उन्हें मंदिर जाना पसंद नहीं है।

जब तक हम फिजिकली फिट हैं, मंदिर जाने में क्या दिक्कत हो सकती है? मंदिर जाने से हमारा कुछ नहीं बिगड़ता। बड़ों को मंदिर जाते देखकर बच्चे भी खुद मंदिर जाने के लिए मोटिवेट होंगे। सभी अच्छी चीजें मंदिर के आस-पास ही होती हैं। पूजा में सादगी को ज़्यादा महत्व दिया जाता है। मंदिर जाना सभी के लिए ज़रूरी है। यह सभी के लिए ज़रूरी है। सबसे बढ़कर, यह हमारा फ़र्ज़ है।

(जारी रहेगा..)

पूजा विधान

पूजा विधान
8. कर्मकांड के लेवल पर पूजा विधि कैसे करें
पंचोपचार पूजा (पूजा विधि) भगवान को चढ़ाने के लिए 5 अलग-अलग चीज़ों का इस्तेमाल करके की जाती है। इसका सीधा मतलब इस तरह है; पंचोपचार = पंच (पांच) + उपचार। भगवान को पांच उपचार – गंध (चंदन का लेप), फूल (फूल), धूप, दीप (तेल का दीपक) और नैवेद्य चढ़ाना। नीचे रोज़ाना पूजा विधि करने का तरीका बताया गया है, साथ ही इस अनुष्ठान से निकलने वाली दिव्य तरंगों को भी ग्रहण करना है।
देवपूजा

A. भगवान को गंध (चंदन का लेप) और हल्दी (हल्दी) – कुमकुम (सिंदूर) लगाना
भगवान को दाहिने हाथ की अनामिका उंगली से गंध लगाएं। फिर, दाहिने हाथ के अंगूठे और अनामिका के बीच एक-एक चुटकी लेकर भगवान के चरणों में हल्दी-कुमकुम चढ़ाएं। पहले हल्दी चढ़ाएं और फिर कुमकुम चढ़ाएं।

B. भगवान को पत्री (खास पत्ते) और फूल चढ़ाना
1. भगवान को बनावटी फूल (कागज़, प्लास्टिक या सजावटी फूल) न चढ़ाएं। भगवान को ताज़े और सात्विक फूल चढ़ाने चाहिए।
2. भगवान को चढ़ाए जाने वाले फूल और पत्री को सूंघें नहीं।
3. फूल चढ़ाने से पहले पत्री चढ़ानी चाहिए।
4. भगवान को ऐसे पत्ते और फूल चढ़ाएं जो भगवान के तत्त्व को सबसे ज़्यादा आकर्षित करते हों।
उदाहरण के लिए, भगवान शिव को बेल और श्री गणपति को दूर्वा और एक लाल फूल। श्री गणपति की मूर्ति को दूर्वा चढ़ाते समय, चेहरे को छोड़कर पूरे शरीर को दूर्वा से ढक लें। श्री गणपति को चढ़ाई जाने वाली दूर्वा दिन में तीन बार बदली जाती है। इसी वजह से श्री गणपति की पूजा दिन में तीन बार की जाती है।

5. खास देवताओं को एक तय संख्या में फूल चढ़ाने चाहिए और वह भी एक खास पैटर्न में। जैसे, श्री गणपति को समचतुर्भुज आकार में 8 फूल चढ़ाने चाहिए, और हनुमान जी को अंडाकार आकार में पांच फूल चढ़ाने चाहिए। ध्यान रखें कि ये फूल तिरछे न हों।

6. घर के मंदिर में रखे देवताओं को फूल चढ़ाते समय, उपास्य देवता का नाम लें और फिर सबसे पहले गहरे रंग के छोटे फूल चढ़ाएं, उसके बाद मीडियम साइज़ के हल्के रंग के फूल और आखिर में बड़े सफेद फूल चढ़ाएं। देवताओं की कोन जैसी सजावट में, कोन के ऊपर रखे श्री गणपति को फूल चढ़ाने के बाद ही अगले स्टेप पर जाएं; दूसरे स्टेप में, दूसरे श्रेष्ठ पुरुष देवताओं को फूल चढ़ाएं। इसके बाद, देवता की स्त्री रूप को फूल चढ़ाएं और फिर देवता के उप-रूपों को।

7. फूल देवता के सिर पर चढ़ाने के बजाय उनके पैरों में चढ़ाने चाहिए।

8. फूल चढ़ाते समय, डंठल देवता की ओर होना चाहिए।

C. देवता के सामने जलती हुई धूप (लोबान) या अगरबत्ती लहराना

1. धूप से निकलने वाले धुएं को हाथों से न फैलाएं।

2. धूप लहराने के बाद, देवता के सामने एक खास खुशबू वाली अगरबत्ती लहराएं, जो उस देवता के तत्व को ज़्यादा आकर्षित करती है। उदाहरण के लिए, भगवान शिव को हीना (एक तरह की जड़ी-बूटी) और श्री लक्ष्मी को गुलाब की अगरबत्ती लहराएं। 3. देवता के सामने धूपबत्ती की संख्या: आम तौर पर, शक्ति पूजा के शुरुआती चरण में साधक को पांच अगरबत्ती, जो लोग अपने कर्तव्य के हिस्से के रूप में पूजा विधि करते हैं उन्हें दो अगरबत्ती और जो साधक भाव और भक्ति के साथ उपासना करते हैं उन्हें एक अगरबत्ती दिखानी चाहिए। देवता के सामने धूप या अगरबत्ती तीन बार दिखानी चाहिए। 4. देवता के सामने धूप या अगरबत्ती दिखाते समय बाएं हाथ से घंटी बजाएं।

Our Website link : https://voiceofjagadguru.com/voj/

Telegram Channel : https://t.me/voiceofjagadguru

Instagram Channel :

https://www.instagram.com/stories/voice_of_jagadguru_voj/3601249542534134684?igsh=MW90YW13N2c5b2hqaA==

WhatsApp Community Channel: https://chat.whatsapp.com/Ly4wlaTu8Kc3sjjEYU8KGu

YouTube Channel : https://youtube.com/@jagad-guru-channel?si=brkLFqiz8sZJ6UII

Editorial Board		
Sri P A Murali	Hon' Advisor	Administrator & CEO, Sri Sringeri Mutt & It's Properties, Sringeri
Sri S N Krishnamurthy	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri Tangirala Shiva Kumara Sharma	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri B Vijay Anand Smt B Srimathi Veeramani	Web Director Web Asst Director & Chief Editor	Coimbatore Tirunelveli
Sri K M Kasiviswanathan	Hon' Editor	Tirunelveli
Sri M Venkatachalam & Team	Translator/writer	Tiruvananthapuram